त्रिलोक सिंह ठकुरेला

जन्मस्थान- नगला मिश्रिया, हाथरस (उ.प्र.)
शिक्षा- विद्युत अभियांत्रिकी में उपाधि
प्रकाशन- नया सवेरा (बाल कविता संग्रह), काव्यगंधा (कुण्डलियासंग्रह) इत्यादि।
सम्मान- राजस्थान साहित्य अकादमी के शम्भूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार सहित अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित । विद्या-वाचस्पति ।
सम्प्रति - उत्तर पश्चिम रेलवे में इंजीनियर

मैं उजाला बांटता हूँ

मैं उजाला बाँटता हूँ, तिमिर में डूबे घरों में ।

मैं जिधर जाता, उधर अरुणाभ आभा जाग जाती,
मोद से भर जिन्दगी फिर फिर खुशी के गीत गाती,
शक्ति भर देता नयी मैं
नीड़ में सोये परों में ।
मैं उजाला बाँटता हूँ
तिमिर में डूबे घरों में ।।

बांझ धरती में उगाता पुष्प, श्रम-सीकर लुटाकर,
झूमने लगती धरा सहसा मेरा स्पर्श पाकर,
जादुई ताकत लिए हूँ मैं
मेरे दोनों करों में ।
मैं उजाला बाँटता हूँ
तिमिर में डूबे घरों में ।।

मेघ घिर आते खुशी के जब कभी भी चाह होती,
मेघ-मालाएं लुटातीं विहँस कर अनगिनत मोती,
इन्द्रधनुषों के नये सपने
जगाता जलधरों में ।
मैं उजाला बाँटता हूँ
तिमिर में डूबे घरों में ।।

दग्ध मन की हर परत में ऊर्जा के रंग भरता,
मैं असंभव को सदा ही संभवों के नाम करता,
और सहसा जा चमकता
सुख लुटाते दिनकरों में ।
मैं उजाला बाँटता हूँ
तिमिर में डूबे घरों में ।।

तुम्हारी याद आई

फिर गगन में मेघ घिर आये,
फिर से झूमी मस्त पुरवाई ।
तुम्हारी याद आई ।।

विरही चातक ने पुकारा
हम अकेले हैं,
बिन तुम्हारे जिंदगी में
व्यर्थ मेले हैं,
स्वाति-बूँदों सी तुम्हारी,
प्रीति सुखदाई ।
तुम्हारी याद आई ।।

गीत होठों के, सुरों की तान
तुमसे है,
जिंदगी में हर घड़ी
मुस्कान तुमसे है,
हर फसल सुख की
तुम्हीं से लहलहाई ।
तुम्हारी याद आई ।।

दूरियों के दंश कितने निर्दयी
हैं पीर देते,
सुधि की भट्टी में तपाकर
हा ! दृगों में नीर देते,
क्यों भला किसने बनाई
प्रीति हरजाई ।
तुम्हारी याद आई ।।

ISSN:2583-8849